चंदेल शासकों का राजनीतिक इतिहास

चंदेल वंश (9वीं से 13वीं शताब्दी) मध्य भारत के एक प्रमुख राजवंश था, जिसने बुंदेलखंड (वर्तमान मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश) पर शासन किया। इनका प्रमुख शासन क्षेत्र खजुराहो, महोबा, कालिंजर और अजयगढ़ था। चंदेलों का राजनीतिक इतिहास उत्तर भारत के विभिन्न साम्राज्यों, विशेषकर प्रतिहारों, पालों और राष्ट्रकूटों के साथ उनके संघर्षों से प्रभावित था।

---

1. उदय और प्रारंभिक शासन (9वीं - 10वीं शताब्दी)

चंदेल वंश का उदय प्रतिहार साम्राज्य के अधीन एक सामंती शक्ति के रूप में हुआ।

- नन्नुक (लगभग **831-845** ई.): चंदेल वंश का संस्थापक, जिसने खजुराहो को अपनी राजधानी बनाया।
- वाक्पति (लगभग **845-865** ई.): प्रतिहार शासकों का सामंत रहा।
- जयशक्ति और विजयशक्ति (लगभग **865-885** ई.): प्रतिहारों की अधीनता से स्वतंत्रता प्राप्त की और अपने राज्य का विस्तार किया।

---

2. स्वर्ण युग और चंद्रगुप्त काल (10वीं - 11वीं शताब्दी)

इस काल में चंदेल वंश एक स्वतंत्र और शक्तिशाली राज्य के रूप में उभरा।

- धंग (**950-999** ई.):
    - महमूद गजनवी के भारत आक्रमण के समय जीवित था।
    - कन्नौज के राष्ट्रकूटों और पालों से संघर्ष किया।
    - खजुराहो के प्रसिद्ध मंदिरों का निर्माण कराया।
- गंड (**1002-1019** ई.):
    - महमूद गजनवी ने 1019 ई. में कालिंजर पर आक्रमण किया, लेकिन असफल रहा।

---

3. चरमोत्कर्ष और प्रतिरोध (11वीं शताब्दी)

- विद्याधर (**1019-1035** ई.):
    - सबसे शक्तिशाली चंदेल शासक।
    - महमूद गजनवी को कालिंजर के युद्ध में कड़ी टक्कर दी।
    - गजनवी की सेना कमजोर पड़ने के कारण कालिंजर विजय नहीं कर सकी।

---

4. पतन और संघर्ष (12वीं - 13वीं शताब्दी)

- परमर्दिदेव **(1165-1203 ई.):**
    - पृथ्वीराज चौहान से मित्रता की।
    - 1182 ई. में चौलुक्य शासक सोलंकी राजा जयसिंह सिद्धराज ने चंदेल राज्य पर आक्रमण किया।
    - 1203 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने कालिंजर पर आक्रमण किया, जिससे चंदेल शक्ति कमजोर हो गई।

इसके बाद चंदेल राज्य धीरे-धीरे कमजोर होता गया और 13वीं शताब्दी तक यह एक क्षेत्रीय शक्ति बनकर रह गया।

निष्कर्ष

चंदेल शासकों ने लगभग चार शताब्दियों तक बुंदेलखंड पर शासन किया और भारतीय इतिहास में कला, स्थापत्य और राजनीतिक शक्ति के लिए प्रसिद्ध रहे। उनके पतन का मुख्य कारण मुस्लिम आक्रमणों, आंतरिक कलह और अन्य राजवंशों के साथ निरंतर संघर्ष रहा।